संस्कृत (कक्षा—छः से आठ)

विषय	*अधिगमप्रतिफल*	*पढ़ने की विधि (बच्चेइन गतिविधियों को अभिभावक/शिक्षक की मदद से करेंगे।)*
गद्यपाठ (कथा) साहित्य की विभिन्न रोचक गतिविधियों द्वारा भाषाशिक्षणसहज व रोचक हो जाता है। संस्कृत भाषा के अध्ययन के लिए भी कथा, निबंध, गीत व नाटक आदि विविध रोचक सामग्री पाठ्यपुस्तक एवं अन्य रूपों में उपलब्ध हैं, इन्हीं विषयों के अध्ययन के समय एवं संदर्भ में भाषा की व्याकरण भी समझ आती है। दूसरी भाषाओं का पूर्वज्ञान भी संस्कृत भाषा के ज्ञान के लिए सहायक होता है। अतः संस्कृत पढ़ते समय विद्यार्थी अपनी मातृभाषा एवं अन्यभाषाओं के ज्ञान का आधार ले सकते हैं व क्रमशः संस्कृत भाषा में विभिन्न कौशलों का	संस्कृत भाषा के स्वाध्याय में आत्मविश्वास जागृत होगा। अर्थपूर्वक पदों को अलग-अलग करते हुए वाक्य को सुचारु रूपसे पढ़कर सामान्य अर्थ का बोध कर सकेंगे। नए-नए शब्दों को चित्रों के मदद से एवं संदर्भ में देखकर समझ सकेंगे और प्रयोग भी कर सकेंगे। व्याकरण के सामान्य नियम जैसे सन्धि, कारक, विभक्ति आदि का सामान्य बोध एवं प्रयोग कर सकेंगे। आत्मविश्वास के साथ सरल संस्कृत में कथा सुन सकेंगे एवं कह सकेंगे।	**पाठकेपूर्व**—प्रकृत पाठ पढ़ने के पहले पाठ के विषयपर उपलब्ध ई-सामग्रियों की सहायता ले सकते हैं। विषय पर सामान्य जानकारी मिल जाने से भाषा समझना सहज हो जाता है। **प्रथमपठन**—ध्यान से कथा काएक साथ पूरा वाचन करें। सामान्य आवाज़ से पढते हुए शब्दों को पहचानते हुए कहानी का सामान्य अर्थ समझने के लिए प्रयास करें। सन्धि या समास में अलग-अलग पदों को अर्थ सहित पहचानें। जैसे उक्त कथा में—यथाऽहम् (यथा अहम्), मत्स्यकूर्मादीन् (मत्स्य + कूर्म + आदीन्), मैवम् (मा एवम्) इत्यादि। ऐसा करने से पदों के अर्थ एवं वाक्यों के अर्थ को समझने में बड़ी सहायता मिलेगी। संस्कृत वाक्य में प्रयुक्त शब्द अधिकतर हिंदी अथवा अन्य भारतीय भाषाओं में उपलब्ध होते हैं, अतः उनके अर्थ समझना कठिन नहीं होता। यदि कथा में कोई अपरिचित शब्द आते हैं तो संदर्भ में उनके अर्थ का सामान्य अनुमान लगाकर आगे बढ़ना चाहिए एवं कथा को पूरा पढ़ लेना चाहिए। **द्वितीयपठन**—प्रथम पाठ से कथा का सामान्य अर्थ समझ लेने केबाद द्वितीय पाठ में अधिक स्पष्टता होगी। उसकेलिए प्रत्येक पद के विभक्तियों पर ध्यान देना चाहिए। साथ ही साथ अपरिचित पदों के अर्थ के लिए पाठ के अंत में दिए

विकास कर सकते हैं। घर में रहकर स्वयं संस्कृत अध्ययन के लिए यहां कुछ दिग्दर्शन किया जा रहा है। केवल उदाहरण के लिए, सप्तम कक्षा के संस्कृत पाठ्यपुस्तक रुचिरा- भाग २ के दूसरे पाठ *दुर्बुद्धि: विनश्यति* का प्रयोग दिखाया गया है।	संस्कृत में कथासार एवं संदेश लिख सकेंगे। कथा में रुचि लेते हुए अन्य कथाओं को भी पढ़ेंगे।	गए शब्दार्थ संग्रह की सहायता ले सकते हैं। उसमें संस्कृत शब्दों के हिंदीऔर अंग्रेजी अर्थ दिए गए हैं तथा संस्कृत में व्याख्या दी गई है। इनकी सहायता से कथा को पूरा करें और अधिक स्पष्टता से समझें। द्वितीय पाठ में कथा का आनंद लेते हुए संस्कृत भाषा के विशेष प्रयोगों पर भी ध्यान दें। नए पदों के अर्थ एवं विशेष व्याकरणिक प्रयोगों को अपने नोटबुक में लिख लें और उनका अनुकरण करते हुए नए-नए वाक्यों की रचना करें। **तृतीयपठन**——दो बार पढ़ने के बाद भाषा एवं विषय की समझ विकसित हो चुकी होगी। एक बार और पूरे मनोयोग से कथा का आनन्द लेते हुए आरम्भ से अन्त तक प्रवाह के साथ पढ़ें । **पाठ के उपरांत**— पाठ के उपरांत एक बार कथा को अपने वाक्यों में लिखें तथा घर के किसी सदस्य, मित्र या शिक्षक को सुनाएं। उसे मोबाइल द्वारा रिकॉर्ड भी कर सकते हैं और मित्रों को भेज भी सकते हैं, ऐसा करने से कथा का आनंद लेने के साथ-साथ आप अपना आत्मविश्वास भी बढ़ा पाएंगे। ***स्वयं मूल्यांकन*** पाठ के अंत में जो अभ्यास प्रश्न दिए गए हैं वह मुख्यतया बोधपरक, प्रयोगात्मक व्याकरण, भाषिक कार्य एवं उच्चारण के अभ्यास के लिए हैं उन्हें धैर्यपूर्वक लिखें। आवश्यकता पड़ने पर शिक्षक, मित्र या अंतर्जाल से सहायता लें। यह प्रक्रिया पूरी होने पर एक सप्ताह तक पुनःपुनः दोहराई जाए। अगले सप्ताह में एक दूसरी कथा लेकर ऐसे ही ही अभ्यास करें और संस्कृत भाषा के विभिन्न कौशल पर दक्षता एवं आत्मविश्वास बढ़ाएं।
सहायक स्रोत	रा.शै.अ.प्र.प.की वेबसाइट पर पाठ्यपुस्तक एवं इतर अध्ययन सामग्री उपलब्ध हैं। इनके अलावा कुछ श्रव्य एवं दृश्य-श्रव्य सामग्री हैं। यूट्यूब में *एन सी ई आर टी ऑफिशियल* चैनल में संस्कृत विषय पर आधारित अनेक चर्चा एवं व्याख्यान उपलब्ध हैं जिनका आप उपयोग कर सकते हैं।	